• रूस-जापान युद्ध के महत्व और प्रभाव का वर्णन करें।

• रूस जापान युद्ध एशियाई राजनीति के साथ-साथ यूरोपीय कूटनीति में एक क्रांतिकारी बिन्दु था विनाचक के शब्दों में पूर्व का बौना पश्चिम के विशाल दैत्य को पराजित किया। इससे पूर्व जापान 1894 के चीन जापान युद्ध में भी चीन को पराजित कर जापानी साम्राज्यवाद की शुरुआत की थी। पाश्चात्य साम्राज्यवादी शक्तियों के विरोध के कारण जापान को पूरी सफलता नहीं मिली थी। इस युद्ध के बाद जापान को पूरी सफलता नहीं मिली थी। इस युद्ध के बाद जापान ई० एच० कार के शब्दों में एशियाई मुनरो वाद के सिद्धान्त पर एशिया में अपने साम्राज्यवाद को आगे बढ़ाया और अधूरे कार्यों को पूरा किया। चीन में एक नया जागरण आया। भारत तथा अन्य एशियाई राष्ट्रों में श्वेत लोगों के साम्राज्यवाद और शोषण के विरुद्ध जागरण आया। रूस की आन्तरिक राजनीति एवं विदेशनीति भी प्रभावित हुई। उसने एशियाई राजनीति में शांति की स्थापना की। मैन्शार के शब्दों में यूरोपीय कूटनीति में तो क्रांति ही आ गयी। ब्रिटेन की विदेशनीति भी प्रभावित हुई। जापान 1902 तक मित्र बन चुका था और भविष्य में ब्रिटेन को भी जापान के साथ युद्ध में शामिल होना पड़ता। अतः 1907 में ब्रिटेन-रूस समझौता हुआ। उधर रूस ने भी स्वयं बाल्कन प्रायद्वीप में प्रवेश किया और अखिल स्लाव आन्दोलन को आस्ट्रिया के विरुद्ध प्रोत्साहित किया। परिणामस्वरूप बोस्निया कांड और बाल्कन युद्ध हुआ। जिसको Full dress rehearsal of World War One" कहा जाता है। इस प्रकार इस घटना से 1905 से लेकर 1914 तक की यूरोपीय राजनीति प्रभावित रही।

प्रथमतः जापान पर इसका प्रभाव पड़ा। जापान की सामरिक शक्ति का प्रमाण विश्व को मिल गया। जापान का आतंक स्थापित हुआ और इसकी सामरिक प्रतिष्ठा बढ़ी। साम्राज्यवादी दृष्टिकोण से जापान को क्लाइड के अनुसार A freehand in Asia मिला और जापानी साम्राज्यवाद का विकास हुआ।

• जापान के पक्ष में – पोर्टसमाउथ की संधि द्वारा तत्काल

जापान को कई तरह के लाभ प्राप्त हुए। वि
ने लिखा है - "Thus the war result in a advance of the Japanese position in the east this time Japan gained the position o the main land once secured one then last whi had been the good of the policy."

फलतः रूस का सुदूरपूर्व में प्रभाव खत्म हो गया। मंचूरिया में रूस का नाम मात्र का प्रभाव रहा। दक्षिण मंचूरिया पर जापान का पूर्ण प्रभाव कायम हो गया। मंचूरिया रेलवे पर जापान का अधिकार हो गया।

कोरिया पर भी जापान का अधिकार कायम हो गया। यहाँ जापान को राजनीतिक, सैनिक और आर्थिक विशेषाधिकार प्राप्त हुए। 1910 तक इसी आधार पर कोरिया को पूर्णतः अपने अधिकार में कर लिया।

चीन में भी जापान को कई तरह के अधिकार मिले। चीन में उसके साम्राज्यवादी विकास में सबल प्रतिद्वन्द्वी रूस था। रूस की पराजय के बाद चीन का मार्ग उन्मुक्त हो गया।

पोर्ट आर्थर और लियाओतुंग प्रायद्वीप जापान को मिले। लियाओतुंग के जिन प्रदेशों को रूस पट्टे पर लिया था। उस पर अब जापान का अधिकार हो गया। सखालीन का दक्षिणी भाग जापान को मिला। साइबेरिया के समुद्री तट पर मछली मारने का अधिकार जापान को मिला।

जापान को क्षतिपूर्ति एवं युद्ध के हर्जाने के रूप में एक बड़ी अर्थराशि प्राप्त हुई। अतः युद्ध जापान के लिए जीवन-मरण का प्रश्न रहा। सम्पूर्ण संसार में और विशेषकर पूर्वी एशिया में उसकी ख्याति बढ़ गयी। जापान का उत्साह काफी बढ़ गया। अब उसने उग्र साम्राज्यवादी नीति अपनाया। फलस्वरूप उसके पास एक विशाल साम्राज्य स्थापित हुआ।

चीन के प्रति - चीन पर भी इस युद्ध का महत्वपूर्ण

प्रभाव पड़ा। चीन में साम्राज्यवादी राष्ट्रों की होड़ चल रही थी और हो गया कि एक और इस युग के बड़े देश रूस [illegible] नीति अपनानी बहुत बड़ा युद्ध होगा। अतः मित्र-राष्ट्र [illegible] विचार आया गया कि चीन का औपनिवेशिक राजनीति में [illegible]। फलस्वरूप चीन में खुले द्वार की नीति अपनाई गई।

फलस्वरूप चीन में भी नवजागरण का सूत्रपात हुआ। यहाँ के देशभक्तों ने नारा दिया चीन में नवयुवक का आगमन होना चाहिए और इसके बिना हमारी मातृ-भूमि का कल्याण नहीं है। फलस्वरूप डा० सेन के नेतृत्व में क्रांतिकारी पार्टी की स्थापना की गई। 1911 की चीनी क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार की गई। इससे चीन वासियों को शिक्षा एवं प्रेरणा मिली। यदि एक छोटा देश को पराजित कर सकता है तो चीन भी मुट्ठी भर विदेशियों को निकाल बाहर कर सकता है। चीन के लोग अपने देश को जापान की तरह शक्तिशाली बनाने लगे। फलस्वरूप चीन में मंचू राजवंश का अन्त हुआ और गणतंत्र का अभ्युदय शुरू हुआ।

- **भारत के प्रति** – भारत पर भी रूस-जापान युद्ध का प्रभाव पड़ा। जापान की विजय ने निराश भारतीयों में उत्साह का संचार किया। Indian review के सम्पादक ने जापान की विजय पर अच्छी टिप्पणी की। रवीन्द्रनाथ ने जापानियों की वीरता पर कविता लिखी। अतः भारतीयों ने सोचा कि अंग्रेजों को वे निकाल सकते हैं। अतः आतंकवादी राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू हुआ। बंग-भंग एवं स्वदेशी आन्दोलन को भी इससे प्रेरणा मिली। इसके प्रभाव का वर्णन पंडित नेहरू ने आत्मकथा में इन शब्दों में किया है – जापान की विजय का समाचार पाकर मैं खुशी से पागल हो उठता था। मैं बराबर-

यही सोचता था कि यूरोप की चंगुल से मैं एशिया को मुक्त कराने के लिए किस तरह मैं तलवार लेकर लडूँगा।"

• एशिया के अन्य देशों पर — भारत के साथ एशिया के अन्य देशों पर भी इस युद्ध का प्रभाव पड़ा। मिस्र, ईरान - एशिया, टर्की तथा अन्य देशों में भी इस तरह विद्रोह की प्रेरणा मिली। एशिया में "White man's burden" का युग था। यहाँ हीनभावना की ओर पराधीनता ईश्वरीय देन है। यूरोप के देश अजेय है इन देशों में भी जापान की प्रेरणा से आन्दोलन शुरू हुआ। मुस्तफा कमाल ने टर्की में "उदीयमान सूर्य" पुस्तक में यूरोपीय शक्ति को पराजित करने के लिए प्रेरणा दी। एशिया में हर जगह स्वाभिमान आत्मगौरव और राष्ट्रीय उत्थान का भाव उदित जागा विदेशी औपनिवेशिक आधिपत्य के विरुद्ध "एशिया वालों का है" नारा बुलन्द किया गया। यहाँ एकता की अपूर्व भावना जागृत हुई। एशियाई राज्यों के संगठन के लिए एक नया आन्दोलन चला। 1948 में दिल्ली में एशियाई देशों का सम्मेलन हुआ। इसमें एशियाई जागरण में रूस - जापान युद्ध की भूरि - भूरि प्रशंसा की गई। अतः यूरोपीय प्रभुत्व की समाप्ति और एशिया के उत्थान में इस घटना का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा।

इस युद्ध का यूरोपीय राजनीति और कूटनीति पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

• रूस के प्रति — यूरोपीय राजनीति में सबसे प्रखर रूस की आन्तरिक और वैदेशिक नीति पर इसका प्रभाव पड़ा। रूस की पराजय से लोगों में तीव्र प्रतिक्रिया शुरू हुई। एक पूर्व के देश द्वारा रूस पराजित हुआ। इससे रूस की प्रतिष्ठा पर आघात पहुँचा।

रूस की सामरिक शक्ति की दुर्बलता का पर्दाफाश हो गया। आर्थिक दृष्टिकोण से दयनीय होने के कारण रूस की आर्थिक स्थिति लड़खड़ा गयी।

एशिया में रूसी प्रसार रुक गया। मंचूरिया तथा आज क्षेत्र में रूस की बहुत सी सुविधाएँ प्राप्त थीं जहाँ पर रूस का औपनिवेशिक प्रभुत्व समाप्त हो गया। रूस का साम्राज्यवादी क्षेत्र अब जापान के हाथ में चला गया। इस समय रूस में जार की स्वेच्छाचारिता थी। सरकार की स्थिति खराब थी। प्रायः कर्मचारी बेईमान एवं भ्रष्ट थे। सेना को उपयुक्त हथियार नहीं मिलता था। अतः इस पराजय का उत्तरदायित्व रूस की जार सरकार पर थोपी गयी। अतः रूस में तत्काल विद्रोह हुआ। युद्ध समाप्त होते स्वेच्छाचारी शासन का विनाश हो, कई नारे बुलंद किया गया। 1905 में रूस में क्रांति हुई। भीषण हत्याकांड हुआ। ड्यूमा की स्थापना हो गई। इस तरह रूस की आन्तरिक राजनीति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

इस युद्ध का प्रभाव रूस की विदेश नीति पर भी पड़ा। अभी तक रूस का ध्यान एशियाई राजनीति पर था। इस युद्ध की पराजय रूसी स्वप्न पर कुठाराघात किया।

अब स्पष्ट हो गया कि इस उदीयमान सुदूर जापान के सामने रूस टिक नहीं सकता है। अतः रूस पुनः बाल्कन प्रायद्वीप की तरफ ध्यान दिया। रूस बाल्कन क्षेत्र में अपना आधिपत्य कायम करने के लिए शक्ति लगा दिया। इस तरह रूस की विदेशनीति में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।

• यूरोप के क्षेत्र में - यूरोपीय कूटनीति भी प्रभावित हुई। 1905 से लेकर 1914 तक की यूरोपीय राजनीति इस युद्ध से प्रभावित रही। रूस एशियाई राजनीति से निराश होकर बाल्कन प्रायद्वीप में प्रवेश किया। वह आस्ट्रिया साम्राज्यवाद के विरुद्ध अखिल स्लाव आन्दोलन को प्रोत्साहन किया। जर्मनी आस्ट्रिया को [illegible] की नीति बाल्कन राजनीति में प्रदान की अतः जोखिमों [illegible] हुआ। बाल्कन युद्ध हुआ। इसको विश्वयुद्ध के पूर्व का "fulldress rehearsal" कहा जाता है अन्ततः सराजेवो हत्याकांड हुआ और

विश्व युद्ध शुरू हुआ। इस प्रकार 1914 तक युरोपीय राजनीति पुर्णतः इस युद्ध से प्रभावित रहा।

युरोपीय राजनीति में क्रांति आ गयी। 1902 में आंग्ल जापानी संधि के बाद ब्रिटेन तटस्थता की नीति का परित्याग किया। 1904 में फ्रांस और ब्रिटेन का समझौता हुआ। 1894 में फ्रांस और रूस मित्र बन चुके थे। 1904-05 का रूस-जापान युद्ध फ्रांस और ब्रिटेन के बीच दरार पैदा करने लगा। ब्रिटेन जापान का मित्र था दूसरी तरफ फ्रांस रूस का। भविष्य में मतभेद बहुत प्रभावित हुआ। अतः 1907 में रूस और ब्रिटेन के बीच भी संधि हो गयी। इस तरह एक त्रिगुट का जन्म हुआ। अब विश्व दो खेमों में बँट गया। युरोप का वातावरण इस गुट समझौता के कारण विस्फोटक हो गया था।

फे के अनुसार ब्रिटेन की विदेशनीति का युद्धपूर्व में मुख्य लक्ष्य रहा कि शांति की स्थापना की जाय क्योंकि ब्रिटेन को भी युद्ध में शामिल होना पड़ा।

इस तरह रूस-जापान युद्ध का युरोपीय एवं एशियाई राजनीति में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा।